

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 20, 20वीं सदी का प्रोटेस्टेंटिज्म कार्ल बार्थ पर केंद्रित

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 20 है, 20वीं शताब्दी में प्रोटेस्टेंटिज्म, कार्ल बार्थ।

मुझे पसंद है, आप जानते हैं, आज शुक्रवार है। तो, शुक्रवार थोड़ा, मुझे नहीं पता, थोड़ा भक्ति या बस थोड़ा सा पढ़ने का दिन है, ताकि हम अपने मन को उस बात में लगा सकें जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं। और क्योंकि हम कार्ल बार्थ पर व्याख्यान दे रहे हैं, और मैंने बार्थ का उल्लेख किया है, और यहाँ मैंने इसे यहाँ रखा है, बार्थ 1934 में बार्मन घोषणा के निर्माता, लेखक और निर्माता थे। और बार्मन घोषणा नाजी जर्मनी की स्थिति के आलोक में अपने विश्वास को घोषित करने के लिए कन्फेसिंग चर्च की घोषणा थी।

और जहाँ तक हमारा सवाल है, ईसाई धर्म का हृदय क्या है? यह रेत में एक रेखा खींचने जैसा था और कह रहा था, आप किस तरफ़ होंगे? क्या आप सुसमाचार के पक्ष में होंगे? या आप नाज़ी-फ़ाईड चर्च के पक्ष में होंगे? आप कहाँ खड़े होने जा रहे हैं? तो, मैंने कहा, ठीक है, आप जानते हैं, मैंने सोचा, ठीक है, मैं यह करूँगा। मैं आज सुबह यहाँ हमारी छोटी सी भक्ति के लिए बारमन घोषणा से बस कुछ खंड पढ़ूँगा। तो, ठीक है, खंड पाँच है, और हम खंड पाँच पर भी वापस आएँगे।

इसलिए, मैं इसे इसलिए पढ़ रहा हूँ क्योंकि मुझे इस बात की थोड़ी जानकारी है कि हम आगे क्या बात करने वाले हैं। पाँचवाँ भाग है, परमेश्वर से डरो, सम्राट का सम्मान करो, 1 पतरस 2.17। पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि अभी तक उद्धार न पाए गए संसार में, जिसमें चर्च भी मौजूद है, राज्य को ईश्वरीय नियुक्ति के द्वारा न्याय और शांति प्रदान करने का कार्य सौंपा गया है। यह मानवीय निर्णय और मानवीय क्षमता के अनुसार धमकी और बल के प्रयोग के माध्यम से इस कार्य को पूरा करता है।

चर्च ईश्वर के प्रति कृतज्ञता और श्रद्धा के साथ इस दिव्य नियुक्ति के लाभ को स्वीकार करता है। यह ईश्वर के राज्य, ईश्वर की आज्ञा और धार्मिकता, और इस प्रकार शासकों और शासितों दोनों की जिम्मेदारी को ध्यान में रखता है। यह उस वचन की शक्ति पर भरोसा करता है और उसका पालन करता है जिसके द्वारा ईश्वर सभी चीजों को बनाए रखता है।

हम इस झूठे सिद्धांत को अस्वीकार करते हैं कि राज्य को अपने विशेष आदेश से परे, मानव जीवन का एकल और अधिनायकवादी क्रम बनना चाहिए और बन सकता है, इस प्रकार चर्च के व्यवसाय को भी पूरा करना चाहिए। हम इस झूठे सिद्धांत को अस्वीकार करते हैं कि चर्च को अपने विशेष आदेश से परे, राज्य की विशेषताओं, कार्यों और गरिमा को अपनाना चाहिए और बन सकता है, इस प्रकार वह स्वयं राज्य का अंग बन जाता है। अब, यह बहुत महत्वपूर्ण है।

हम बाद में इस पर वापस आएं। लेकिन मुझे इस स्वीकारोक्ति के संदर्भ में छठा पैराग्राफ पढ़ने दें। छठा नंबर है, देखो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ, युग के अंत तक, मत्ती 28.20, और परमेश्वर का वचन बंधन में नहीं है 2 तीमुथियुस 2:9। चर्च का कमीशन जिस पर इसकी स्वतंत्रता आधारित है, वह मसीह के स्थान पर सभी लोगों को ईश्वर की मुफ्त कृपा का संदेश देने में शामिल है, और इसलिए धर्मोपदेश और संस्कार के माध्यम से अपने स्वयं के शब्द और कार्य की सेवकाई में।

हम झूठे सिद्धांत को अस्वीकार करते हैं जैसे कि चर्च, मानवीय अहंकार में, प्रभु के वचन और कार्य को किसी भी मनमाने ढंग से चुनी गई इच्छाओं, उद्देश्यों और योजनाओं की सेवा में रख सकता है। जर्मन इवेंजेलिकल चर्च की धर्मसभा यह घोषणा करती है कि वह इन सत्यों की स्वीकृति और इन त्रुटियों की अस्वीकृति में जर्मन इवेंजेलिकल चर्च के धर्मसभा के संघ के रूप में अपरिहार्य धार्मिक आधार को देखती है। यह उन सभी को आमंत्रित करता है जो इसकी घोषणा को स्वीकार करने में सक्षम हैं और चर्च की राजनीति में अपने निर्णयों में इन धार्मिक सिद्धांतों के प्रति सचेत हैं।

यह उन सभी लोगों से आग्रह करता है जो इससे जुड़े हैं कि वे विश्वास, प्रेम और आशा की एकता में लौट आएँ। तो, यही वह था जो बारमन घोषणा का उद्देश्य था, और यह एक तरह से बहुत विस्फोटक बन गया। मेरा मतलब है, यह वास्तव में रेत में एक रेखा थी जिसका उद्देश्य ऐसा करना था और यह बताना था कि कौन सुसमाचार के पक्ष में होगा और कौन नहीं।

चलिए इस बारे में स्पष्ट हो जाएँ। तो, बारमैन घोषणा के लिए यहाँ बहुत मजबूत चीजें हैं। ठीक है।

तो, हमने यहाँ लेक्चर 10, पेज 14, कार्ल बारथ की जीवनी पर एक संक्षिप्त विवरण दिया है, और अब हम नंबर बी, धर्मशास्त्र में जाने के लिए तैयार हैं। क्या उनके जीवन के बारे में कोई सवाल है, हालाँकि, जीवनी संबंधी विवरण जो हमने दूसरे दिन दिया था? क्या कार्ल बारथ के जीवन के बारे में कुछ ऐसा है जिसके बारे में आप अभी भी सवाल करना चाहते हैं? हमने बस एक सिंहावलोकन दिया। हम पाठ्यक्रम में शायद चार या पाँच ऐसे लोगों के साथ ऐसा करते हैं जो सर्वोत्कृष्ट लोग हैं।

ठीक है। आज, आइए धर्मशास्त्र पर चलते हैं और धर्मशास्त्र की पृष्ठभूमि पर, और फिर हम कार्ल बारथ के कुछ धर्मशास्त्रीय युगों में जाएंगे। बारथ का मानना था कि प्रोटेस्टेंट उदारवाद मूल रूप से दोषपूर्ण था।

उनका मानना था कि प्रोटेस्टेंट उदारवाद मूल रूप से गलत था। अब, हमने दूसरे दिन जब उनकी जीवनी के बारे में बात की थी, तो हमने बताया था कि उनका पालन-पोषण इसी तरह हुआ था। यही उनकी ट्रेनिंग थी।

और अब, आंशिक रूप से प्रथम विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप, और मुख्य रूप से बाइबल को खोलने के परिणामस्वरूप, उन्हें लगता है कि यहाँ एक बुनियादी दोष है, और ईसाई धर्मशास्त्र के साथ एक बुनियादी समस्या है, और वह धर्मशास्त्र को प्रोटेस्टेंट उदारवाद से दूर ले जाना चाहते हैं। अब, जहाँ तक उनका संबंध है, पृष्ठभूमि के इस पहले बिंदु के तहत, यहाँ शब्द समायोजन है। जहाँ तक उनका संबंध है, प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्र ने खुद को व्यापक संस्कृति के साथ समायोजित कर लिया है।

वह व्यापक संस्कृति के लिए उस समायोजन को चुनौती देने जा रहा है। वह इसी तरह का काम करने जा रहा है, यही वह काम है जिसे वह करने जा रहा है। इसलिए, हम उस समायोजन के दो क्षेत्रों का उल्लेख करने जा रहे हैं, इसलिए मैं उन्हें यहाँ पृष्ठभूमि में उल्लेख करना चाहूँगा।

समायोजन का एक क्षेत्र सकारात्मक दृष्टिकोण है, एक तरह से, विज्ञान के प्रति, संस्कृति के प्रति, कला के प्रति, प्राकृतिक धर्मशास्त्र के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, उस तरह के सांस्कृतिक तत्वों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, विज्ञान पर किसी भी निर्णय के बिना, संस्कृति की दुनिया और कला की दुनिया पर किसी भी निर्णय के बिना। और वह उस तरह के बहुत, उस तरह के सकारात्मक दृष्टिकोण की निंदा करता है, जिसे हम उसके धर्मशास्त्र में जाने पर देखेंगे। इसलिए, उसे लगता है कि धर्मशास्त्र के अनुसार यह गलत तरीका है।

श्लेयरमेकर के बाद से प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्र इसी तरह आगे बढ़ा है, और हम यहाँ गलत रास्ते पर चले गए हैं। इसलिए, यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ वे बहुत आलोचनात्मक हो जाते हैं, और हम यह तब देखेंगे जब हम उनके धर्मशास्त्र के बारे में बात करेंगे। दूसरा क्षेत्र जहाँ वे आलोचनात्मक हो जाते हैं, वह है प्रोटेस्टेंट उदारवादी भावना पर जोर, प्रोटेस्टेंट उदारवादी उस पर जोर देते हैं जिसे वे अक्सर रहस्यवाद या धार्मिक भावनाओं के रूप में संदर्भित करते हैं, भावनाओं पर जोर देते हैं, इस तरह का अनुभवात्मक धर्म जिसकी ओर श्लेयरमेकर ने हमें ले जाया है।

और वह वास्तव में इसकी निंदा करता है क्योंकि जहाँ तक उसका सवाल है, यह बाइबल का धर्म नहीं है। यह वह नहीं है जिसके लिए परमेश्वर हमें बुलाता है। इसलिए, जब प्रोटेस्टेंटवाद और ईसाई जीवन जीने की बात आती है, तो भावना, भावना या अनुभव से जुड़ी कोई भी चीज़, वह उससे खुश नहीं है।

इसलिए, वह इसकी निंदा करते हैं। इसलिए, वह जो करना चाहते हैं वह धर्मशास्त्र को सुधार धर्मशास्त्र में वापस लाना है। उन्हें लगता है कि बाइबल के सबसे अच्छे व्याख्याकार, बाइबल के सबसे अच्छे, सबसे मजबूत व्याख्याकार जो हमारे पास हैं, वे सुधार के लोग हैं।

तो, यह लूथर, खास तौर पर केल्विन और अन्य लोग हैं। तो, वह बाइबल को देखता है, और फिर वह कहता है, अच्छा, हम बाइबल की व्याख्या कैसे करेंगे? खैर, बाइबल के सबसे अच्छे व्याख्याकार सुधारक थे। चलो सुधार पर वापस चलते हैं।

आइए हम अपने धर्मशास्त्र को सुधार सिद्धांत पर आधारित करें। आइए हम अभी ऐसा करें। प्रोटेस्टेंट के रूप में हमें यही करने की आवश्यकता है।

यही वह लड़ाई थी जिसमें वह शामिल था। इसलिए, कभी-कभी, इस आंदोलन को नव-रूढ़िवादी कहा जाता है। क्या मैंने इसे यहाँ रखा है? मैंने इसे यहाँ नहीं रखा है।

कभी-कभी, जिस आंदोलन को आगे बढ़ाने में वह मदद करता है, उसे एक तरह से नियो-ऑर्थोडॉक्सी या न्यू ऑर्थोडॉक्सी कहा जाता है। अब, न्यू ऑर्थोडॉक्सी से उनका मतलब 20वीं

सदी में लाए गए रिफॉर्मेशन ऑर्थोडॉक्सी से है, लेकिन यह नियो-ऑर्थोडॉक्सी है। कुछ लोग इसे एक अच्छा शीर्षक मानते हैं।

कुछ लोग इस उपाधि का अपमानजनक तरीके से इस्तेमाल करते हैं। मेरा मतलब है, हम लोगों के लिए लेबल का इस्तेमाल सिर्फ इसलिए करते हैं ताकि उन्हें जगह और समय के हिसाब से पहचाना जा सके। इसलिए, हमने कहा कि श्लेयरमाकर उदार धर्मशास्त्र के जनक हैं।

खैर, नव-रूढ़िवादी धर्मशास्त्र के निर्माताओं में से एक कार्ल बारथ हैं। तो, यह सिर्फ नंबर एक है। यही पृष्ठभूमि है।

इसलिए यह यहाँ इतना महत्वपूर्ण है। मुझे लगता है कि टेड और मैं उस दिन इस बारे में बात कर रहे थे, लेकिन जब कोई मुझसे कहता है, ओह, मैंने कार्ल बारथ को कभी नहीं पढ़ा। वह बहुत उदार थे।

जब कोई ऐसा कहता है तो उस वाक्य का कोई मतलब ही नहीं बनता। वह बहुत उदार है। मैं उसे नहीं पढ़ूंगा।

यह बात समझ में नहीं आती क्योंकि जिस चीज़ के खिलाफ उन्होंने लड़ाई लड़ी वह प्रोटेस्टेंट उदारवाद था। जिस चीज़ के बारे में उन्हें लगा कि वह ईसाई धर्म को खतरे में डाल रही है वह शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद था। इसलिए, उन्होंने उसके खिलाफ लड़ाई लड़ी, और उन्होंने उदारवाद का बहुत ही उल्लेखनीय तरीके से सामना किया।

ठीक है। उस पृष्ठभूमि सामग्री के बारे में कुछ? इससे हमें यह समझने में मदद मिलती है कि वह वहाँ क्यों गया। ठीक है।

तो चलिए नंबर दो पर आते हैं, ईश्वर की श्रेष्ठता। ठीक है। अब, प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने ईश्वर और हमारे बीच निरंतरता पर जोर दिया है।

एक निरंतरता है। ईश्वर और हमारे बीच एक संबंध है। और एक तरह से, उससे जुड़ने वाला व्यक्ति यीशु था।

और इसलिए, यीशु वह व्यक्ति बन जाता है जो श्लेयरमेकर के लिए ईश्वर की चेतना से इतना भरा हुआ है कि हम यीशु जैसा बनना चाहते हैं। कोई बात नहीं, वह ईश्वर नहीं था, लेकिन वह निश्चित रूप से ईश्वर की चेतना से भरा हुआ था। इसलिए, हम यीशु जैसा बनना चाहते हैं।

यीशु ईश्वर और हमारे बीच संयोजक हैं। तो, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने इस महान प्रकार की निरंतरता पर जोर दिया। ठीक है।

अब, कार्ल बारथ आगे आते हैं और कहते हैं, ठीक है, बेशक, आपने यह सब गलत समझा है। बाइबल निरंतरता का शब्द नहीं है। बाइबल ईश्वर और हमारे बीच असंततता का शब्द है।

ईश्वर पूर्णतः अन्य है। अब, आप इस पर शब्दों का खेल खेल सकते हैं। ईश्वर पूर्णतः अन्य है, पवित्र है।

वह पूरी तरह से अन्य है। या आप कह सकते हैं कि ईश्वर पूरी तरह से, सम्पूर्ण रूप से अन्य है। वह पूरी तरह से या पूरी तरह से अन्य है।

लेकिन कार्ल बार्थ के लिए, ईश्वर के बारे में बात करना कि वह मेरा अच्छा दोस्त है, मेरा अच्छा दोस्त है, यह यीशु और मैं जैसी बातें हैं, यह उसके लिए बिल्कुल भी आसान नहीं था। ईश्वर पूरी तरह से अलग है। वह पूरी तरह से अलग है।

और हमारे और ईश्वर के बीच एक असंततता है। कोई निरंतरता नहीं, जैसा कि प्रोटेस्टेंट उदारवाद हमें बताता रहा है, बल्कि हमारे और ईश्वर के बीच एक असंततता है। इसलिए, जब ईश्वर की उत्कृष्टता की बात आती है, तो उनका तर्क यह है कि प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने लोगों को सिखाया है कि उन्हें ईश्वर तक पहुँचने के लिए काम करना होगा क्योंकि यह निरंतरता है।

तो, आप ईश्वर तक पहुँचने के लिए काम करने में सक्षम होंगे। आप ईश्वर की उपस्थिति में अपना रास्ता बनाने में सक्षम होंगे, शायद भावनाओं से, शायद अनुभव से, शायद किसी तरह के ज्ञान से। लेकिन कार्ल बार्थ ने कहा कि यह असंभव है।

आप इस पारलौकिक ईश्वर तक पहुँचने के लिए कोई काम नहीं करते। जहाँ तक बार्थ का सवाल है, पारलौकिक ईश्वर के सामने खड़े होने पर आपका रवैया पापपूर्ण, असहाय और कमजोर होता है। और यह तभी संभव है जब आप खुद को उस तरीके से समझें कि ईश्वर आपके जीवन में प्रवेश कर सकता है और आपकी मदद कर सकता है।

तो, जब वह ईश्वर की उत्कृष्टता के बारे में बात कर रहा है, तो वह एक तरह से उन सभी गुणों पर जोर दे रहा है, जिनके बारे में उसका मानना है कि बाइबल इस असहायता और कमजोरी और इसी तरह की अन्य बातों के बारे में बात करती है, और अपने जीवन में सफलता पाने के लिए ईश्वर पर भरोसा करना। इस तरह की सभी उदारवादी बातें इस बारे में नहीं हैं कि आप अपनी ताकत, अपने ज्ञान, अपने अनुभव से ईश्वर तक कैसे पहुँच सकते हैं। यहाँ बताया गया है कि आप ईश्वर तक कैसे पहुँच सकते हैं।

तो, यह निरंतरता नहीं है, यह असंततता है। यह आसन्नता नहीं है; यह ईश्वर का पारलौकिकता है। तो, वह ईश्वर को इस पूरी तरह से अलग तरीके से देख रहा है, एक अर्थ में।

अब, वह जो कहता है वह यह है कि ईश्वर कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे समझा जा सके। ईश्वर कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे हमारे ज्ञान, भावनाओं, भावनाओं, अनुभवों या किसी भी चीज़ से समझा जा सके। वह कोई वस्तु नहीं है।

उन्हें लगा कि उदार ईसाई धर्म में यह बात बहुत गलत है कि आप ईश्वर को समझ सकते हैं। ईश्वर एक विषय है, कोई वस्तु नहीं। वह एक विषय है।

ईश्वर ही वह है जो बोलता है। ईश्वर ही वह है जो हमें संबोधित करता है। और फिर यह हम पर निर्भर करता है कि हम उस शब्द को समझने की कोशिश करें जो वह हमें देता है।

लेकिन वह कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे हम तर्कसंगत ज्ञान या अनुभव या ऐसी किसी चीज़ से जान सकें। साथ ही, जब ईश्वर की उत्कृष्टता की बात आती है, तो यहीं पर, एक तरह से, बार्थ सांस्कृतिक मुद्दे पर आते हैं। व्यापक संस्कृति के साथ हमारे रिश्ते के बारे में क्या? जिस व्यापक संस्कृति में हम रहते हैं, उसके बारे में क्या? विज्ञान के बारे में क्या? विज्ञान की दुनिया या कला की दुनिया, इतिहास की दुनिया या बौद्धिक ज्ञान की दुनिया, इत्यादि के बारे में क्या? उसके बारे में क्या? खैर, उदार ईसाई धर्म के लिए, ईश्वर संस्कृति के संरक्षक संत की तरह थे।

भगवान दयालु थे, जो संस्कृतियों को आशीर्वाद देते हैं, न कि कार्ल बार्थ के लिए। कार्ल बार्थ के लिए, भगवान सभी संस्कृतियों के न्यायाधीश हैं।

इसलिए, जब तक लोग यह नहीं सोचते कि परमेश्वर केवल नाज़ियों और नाज़ी जर्मनी का न्याय कर रहा है, वे गलत होंगे क्योंकि परमेश्वर सभी संस्कृतियों का न्याय करता है। क्योंकि सभी, किसी न किसी अर्थ में, परमेश्वर की अवज्ञा में खड़े हैं। और इसलिए, सभी संस्कृतियाँ परमेश्वर के न्याय के अधीन आती हैं।

अब, नाज़ी जर्मनी एक चरम उदाहरण था, बेशक, अपनी क्रूरता और अमानवीयता आदि के कारण, जिसका न्याय भगवान करेंगे। लेकिन भगवान सभी संस्कृतियों का न्याय करते हैं। ऐसी कोई संस्कृति नहीं है जिसे किसी तरह से भगवान का आशीर्वाद मिला हो।

तो, वह संरक्षक संत नहीं है, लेकिन वह न्यायाधीश है। ठीक है, तो आपको आश्चर्य नहीं होगा कि कार्ल बार्थ का धर्मशास्त्र ईश्वर की उत्कृष्टता की इस समझ से शुरू होता है, ईश्वर की प्रकृति की समझ से शुरू होता है। अगर हम इसे सीधे नहीं समझ पाते हैं, तो कुछ भी स्पष्ट नहीं होने वाला है।

हमें कार्ल बार्थ के लिए ईश्वर कौन है, इस बारे में अपनी समझ स्पष्ट करनी होगी। तो, ईश्वर की उत्कृष्टता। मैं आपको बार्थ के बारे में समझाने की कोशिश कर रहा हूँ।

मैं आपको बार्थ को बेचने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। आप सहमत या असहमत हो सकते हैं। आपके पास कुछ बिंदु हो सकते हैं... और यह उन सभी लोगों के लिए सच है जिनका हमने अध्ययन किया है।

मैं आपको यह बेचने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ क्योंकि आपको अपने धर्मशास्त्र और अपनी सोच को आकार देने की ज़रूरत है। लेकिन क्या पारलौकिकता के बारे में कोई सवाल हैं? आप समझ सकते हैं कि उन्हें इससे क्यों निपटना पड़ा, प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्र के प्रकाश में यह इतना महत्वपूर्ण क्यों था, और उन्हें इस तरह से इससे क्यों निपटना पड़ा क्योंकि उन्हें लगा कि यह ईश्वर का बाइबिलीय रहस्योद्घाटन था। उन्हें लगा कि यही वह है जिसे आप बाइबिल में पाते हैं।

ठीक है, ईश्वर का पारलौकिकता। तीसरा नंबर है पाप, मनुष्य का पाप। ठीक है, अब कौन सा पाप... सबसे पहले, एक तरह से, वह रेनहोल्ड नीबूहर की तरह है।

हमने पिछले व्याख्यान में रेनहोल्ड नीबूर का उल्लेख किया था, लेकिन नीबूर ने कहा कि मूल पाप सभी सिद्धांतों में सबसे अधिक अनुभवजन्य है। इसलिए, यदि आप एक ऐसा सिद्धांत देखना चाहते हैं जिसे आप हर दिन देख सकते हैं, यदि आप एक ऐसा सिद्धांत जानना चाहते हैं जिसे आप हर दिन देख सकते हैं, जिसे आप लगभग छू सकते हैं और महसूस कर सकते हैं, तो यह मूल पाप का सिद्धांत है। खैर, बार्थ ने बिल्कुल उस वाक्यांश का उपयोग नहीं किया, लेकिन वह निश्चित रूप से उसमें विश्वास करता था।

तो, जहाँ तक बार्थ का सवाल है, पतन के बाद से ही मानवजाति पाप के प्रभुत्व में रही है। उसे लगा कि उसने इसे बाइबल में देखा है। तो, पतन के बाद से ही हम पाप के प्रभुत्व में रहे हैं।

और पाप ने जो किया है, मेरा मतलब है, वह यह है कि हमारी प्राकृतिक क्षमताएँ भी अभी भी पाप के प्रभुत्व में हैं। यहाँ तक कि हमारी प्राकृतिक क्षमताएँ, दूसरे शब्दों में, वह एकिनास की तरह है, ऑगस्टीन की तरह। हमारे पतन में, हमारी प्राकृतिक क्षमताएँ पूरी तरह से समाप्त नहीं हुईं।

अगर हमारी प्राकृतिक क्षमताएँ खत्म हो जाएँ, तो हम तर्क नहीं कर पाएँगे; हम सोच नहीं पाएँगे, और हम इसमें कुछ भी नहीं जोड़ पाएँगे और कुछ भी नहीं कर पाएँगे। लेकिन हमारी प्राकृतिक क्षमताएँ खत्म नहीं हुई हैं, बल्कि उनमें बहुत बाधाएँ हैं। जहाँ तक बार्थ का सवाल है, वे बहुत विकृत हैं। इसलिए, यहाँ हम अपने पाप में हैं, परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह में हैं।

और इससे क्या हुआ? इसका अंतिम परिणाम क्या है? खैर, इसने हमारे और ईश्वर के बीच दरार पैदा कर दी है। तो, इसने हमारे और ईश्वर के बीच दरार पैदा कर दी है। यह रेत में एक रेखा है: ईश्वर एक तरफ है, और हम दूसरी तरफ हैं।

पाप ने यही किया है। पाप का यही परिणाम है। हम पापपूर्ण, विद्रोही जीवन जी रहे हैं जिसमें हम परमेश्वर से प्रेम नहीं करते बल्कि उससे घृणा करते हैं।

और इसलिए, उन्होंने कहा, यह उसका परिणाम है। इसलिए, अब, यही कारण है कि, जैसा कि उदार धर्मशास्त्र ने सिखाया है, इसलिए ईश्वर तक अपना रास्ता बनाना असंभव है। आपके पास ईश्वर तक अपना रास्ता बनाने की कोई क्षमता नहीं है।

आपके पास अपनी भावनाओं, अपनी भावनाओं, कानून का पालन करने, एक अच्छे नैतिक व्यक्ति होने, या तर्क करने, तर्क करने, सोचने की अपनी क्षमता के द्वारा खुद को ईश्वर के पक्ष में रखने की कोई क्षमता नहीं है। आप खुद को ईश्वर के पक्ष में नहीं रख सकते, आप खुद को नहीं रख सकते, आप ईश्वर को इस तरह नहीं रख सकते जैसे कि वह आपका कुछ ऋणी हो, क्योंकि हम पापी हैं, हम ईश्वर के खिलाफ विद्रोह कर रहे हैं। इसलिए, ईश्वर को खोजने के सभी प्रयास अब उसके लिए, बार्थ के लिए असंभव हैं।

ठीक है? और इसमें हमारी सांस्कृतिक उपलब्धियाँ शामिल हैं, लेकिन इसमें यह भी शामिल है, माफ़ करें, इसमें यह भी शामिल है, ओह, नहीं, मुझे लगा कि मेरे पास प्राकृतिक धर्मशास्त्र शब्द है, शायद मेरे पास नहीं था। ठीक है। इसमें हमारी सभी सांस्कृतिक उपलब्धियाँ शामिल हैं, जो हमें बहुत शानदार, अद्भुत और परिपूर्ण लगती हैं।

और याद रखें, बार्थ मोजार्ट के प्रेमी थे। याद रखें, बार्थ को संगीत से प्यार था, मोजार्ट से प्यार था। वह मोजार्ट के विशेषज्ञ थे।

तो, ऐसा नहीं है कि हमारी कुछ उपलब्धियों का कोई मतलब ही नहीं है। आप यह नहीं कह सकते कि हमारी उपलब्धियाँ ईश्वर के सामने खुद को स्वीकार करने के तरीके हैं, बस इतना ही। और फिर उन्होंने प्राकृतिक धर्मशास्त्र को भी चुना, और मैंने इसे लिखा नहीं, मुझे लगा कि मैंने लिखा है।

याद रखें, हमने पाठ्यक्रम में पहले प्राकृतिक धर्मशास्त्र के बारे में बात की है। इसलिए, जो लोग प्राकृतिक धर्मशास्त्र पर भरोसा करते हैं, आप प्राकृतिक दुनिया को देखते हैं, आप हमारे आस-पास की दुनिया को देखते हैं, और आप ईश्वर और ईश्वर की प्रकृति के बारे में कुछ निष्कर्ष निकाल सकते हैं। ठीक है? और, बेशक, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद वास्तव में मसीह में कुछ विशेष प्रकट धर्मशास्त्र के बजाय प्राकृतिक धर्मशास्त्र पर निर्भर था।

बार्थ ने कहा, नहीं, प्राकृतिक धर्मशास्त्र, आप ईश्वर के बारे में कोई निष्कर्ष निकालने के लिए प्राकृतिक धर्मशास्त्र पर भरोसा नहीं कर सकते। आप प्राकृतिक धर्मशास्त्र से ईश्वर का निष्कर्ष कैसे निकालेंगे? और आप प्राकृतिक धर्मशास्त्र से ईश्वर के गुणों का निष्कर्ष कैसे निकालेंगे? एक प्राकृतिक धर्मशास्त्र, बार्थ के लिए यह आपको कहाँ ले जाएगा? मेरा मतलब है, यह निश्चित रूप से एक सुंदर दिन है। और आप उस सुंदर दिन को देखकर ईश्वर के बारे में कुछ निष्कर्ष निकाल सकते हैं।

ईश्वर व्यवस्था, शांति और सद्भाव का ईश्वर है। मान लीजिए कि हमारे रास्ते में सुनामी आ रही है, और सुनामी से 100,000 लोग नष्ट होने वाले हैं, तो आपका प्राकृतिक धर्मशास्त्र कहाँ है? तब आप ईश्वर के बारे में क्या सोचेंगे? क्या ईश्वर यही करता है? वह सुनामी से लोगों को मिटा देता है, 100,000, 200,000 लोगों को, पूरे शहरों को मिटा देता है, और इसी तरह। फिर, यदि आप प्राकृतिक धर्मशास्त्र पर भरोसा करने जा रहे हैं, तो आप ईश्वर के बारे में क्या निष्कर्ष निकालने जा रहे हैं? खैर, आपका निष्कर्ष यह है कि आप यह निष्कर्ष निकालने जा रहे हैं कि वह एक सनकी ईश्वर, एक दुष्ट ईश्वर है।

तो, प्राकृतिक धर्मशास्त्र ईश्वर को समझने का एक तरीका है, और यह बार्थ के लिए बाहर है। अब, लंबी कहानी संक्षेप में, उन समूहों में से एक जो प्राकृतिक धर्मशास्त्र पर बहुत अधिक निर्भर था, वह सेंट थॉमस एक्विनास के बाद से रोमन कैथोलिक धर्म था। अब, बार्थ नहीं है, और मुझे नहीं लगता कि वह केवल प्रोटेस्टेंट को चुन रहा है।

वह कैथोलिकों को भी निशाना बना रहा है। जब वह कोई निर्णय लेता है तो वह किसी व्यक्ति का सम्मान नहीं करता है, और मुझे धर्मशास्त्र को चुनौती देनी है क्योंकि यह 19वीं और 20वीं शताब्दी में उभरा था। ठीक है, तो पाप है।

अब, सवाल पाप के साथ है, उन्होंने इसे इस तरह से नहीं कहा, लेकिन मैंने इसे इस तरह से कहा, लेकिन सवाल यह है कि क्या यह एक प्रति-सांस्कृतिक संदेश है? जब हम मानव जाति के पाप के बारे में बात करते हैं, तो हम ईश्वर के खिलाफ विद्रोह कर रहे हैं। हमारी कोई भी सांस्कृतिक उपलब्धि हमें ईश्वर के सामने स्वीकार नहीं करेगी। हम प्राकृतिक धर्मशास्त्र के माध्यम से ईश्वर को नहीं समझ पाएंगे, लेकिन क्या यह एक प्रति-सांस्कृतिक संदेश है? अब, उन्होंने उस शब्द का उपयोग नहीं किया, लेकिन इसका उत्तर बिल्कुल है: यह एक प्रति-सांस्कृतिक संदेश है।

हम यहाँ पाप के बारे में बात कर रहे हैं। हम परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह के बारे में बात कर रहे हैं। जिस सामान्य दुनिया में हम रह रहे हैं, क्या वे पाप के बारे में बात कर रहे हैं या परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह के बारे में? नहीं, मैं ठीक हूँ, और आप ठीक हैं।

वे इसी बारे में बात कर रहे हैं। मैं ठीक हूँ, और तुम ठीक हो। मैं ठीक हूँ, तुम ठीक हो।

मैं वही करता हूँ जो मुझे अच्छा लगता है, और तुम वही करो जो तुम्हें अच्छा लगता है। देखो, बार्ट, उसने यह नहीं माना। इसलिए, हम पापी हैं।

ठीक है, क्या कोई यहाँ पाप के बारे में बात करना चाहता है? पाप के बारे में बात करें? क्या यहाँ कोई पापी है? ठीक है, ठीक है। अब, नंबर तीन, मेरा मतलब है, आपकी सूची में नंबर चार यीशु मसीह है। यीशु मसीह।

ठीक है, हम यीशु के साथ कहाँ हैं? ध्यान दें कि मैंने इसे तीसरे स्थान पर रखा है, मैंने इसे उनके धर्मशास्त्र, क्राइस्टोलॉजी के केंद्र में रखा है। ठीक है, अब, यदि ईश्वर और हमारे बीच कोई वियोग है, यदि ईश्वर और हमारे बीच एक बहुत बड़ा अंतर है, और यदि हम ईश्वर की ओर बढ़ने और ईश्वर तक पहुँचने में असमर्थ हैं, तो ईश्वर ने जो करने का फैसला किया है, अपनी कृपा में, ईश्वर ने हमारे जीवन में प्रवेश करने का फैसला किया है। ईश्वर का एकमात्र सच्चा रहस्योद्घाटन यीशु है।

ईश्वर का एकमात्र सच्चा प्रकटीकरण यीशु है। ईश्वर का एकमात्र सच्चा संचार यीशु है। ठीक है, यह हमें बाइबल में बार्ट के पसंदीदा अध्याय की ओर ले जाता है।

तो, मैं इसे आपको दे देता हूँ। यह यूहन्ना 1 है, आप इसे जानेंगे, यह यूहन्ना 1:1 से 18 है। तो, यूहन्ना के सुसमाचार की प्रस्तावना, यूहन्ना 1:1 से 18।

क्या किसी के पास डॉ. हंट के साथ जॉन का सुसमाचार है? क्या आपके पास अभी है? ठीक है, तो आप शायद प्रस्तावना से बहुत आगे निकल चुके हैं। क्या आप हैं? आप अध्याय 6 में हैं। ठीक है, स्टीव को बताएं कि हमारे पास पाठ्यक्रम में पहले से ही तीन सप्ताह बचे हैं, तीन पूरे सप्ताह, पाठ्यक्रम में तीन सोमवार, बुधवार और शुक्रवार के सप्ताह बचे हैं। ठीक है, ठीक है, बस उसे इस बारे में याद दिलाएँ। तो, आपने पहले ही प्रस्तावना पढ़ ली है।

खैर, यह प्रस्तावना बहुत ही अद्भुत है। हम इसे पढ़ने में समय नहीं लगाएंगे, लेकिन इसमें एक श्लोक है जो बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए, आपको इसे अपने नोट्स में लिख लेना चाहिए और इसे बहुत ध्यान से पढ़ना चाहिए।

यह यूहन्ना 1:14 है। ठीक है, यूहन्ना 1:14 कार्ल बारथ के लिए बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है। ठीक है, और यूहन्ना 1:14 क्या कहता है? वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में वास किया।

पिता के एकलौते पुत्र की है। वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में वास किया।

अब, बारथ के पास इस आयत के लिए एक मुहावरा था। उन्होंने इसे संक्षेप में धर्मशास्त्र कहा, संक्षेप में धर्मशास्त्र। जहाँ तक बारथ का सवाल है, यह बाइबल का संदेश था, यूहन्ना 1:14।

बाकी बाइबल जॉन 1:14 पर एक टिप्पणी है। यह बारथ के लिए बाइबिल के पाठ का केंद्र है, जॉन 1:14, संक्षेप में धर्मशास्त्र। इसलिए, अब हम यहाँ केवल बारथ को समझाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन अगर यह बाइबिल के संदेश का केंद्र है, तो इसका मतलब है कि ईसाई चर्च का केंद्रीय सिद्धांत अवतार का सिद्धांत है।

इसलिए, ईसाई धर्म का मुख्य सिद्धांत अवतार है। शब्द देहधारी हुआ, भगवान देहधारी हुआ। जहाँ तक बारथ का सवाल है, बाकी सब कुछ अवतार के सिद्धांत से निकलता है।

अवतार का सिद्धांत शुरुआत और अंत है। यह जॉन 1, 14 है। यह संक्षेप में धर्मशास्त्र है, और यह वास्तव में बहुत अद्भुत है।

ठीक है। तो, यीशु में, फिर, हम मसीह में परमेश्वर की कृपा देखते हैं। हम इसे पूरी तरह से देखते हैं।

हम इसे पूरी तरह से देखते हैं। हम इसे शुरू से लेकर अंत तक देखते हैं। हम उस अनुग्रह को देखते हैं जो हमें बचाता है।

परमेश्वर हमारे पापों को तोड़ता है और हमें छुड़ाता है, और बचाता है। ठीक है। अब, हमें यहाँ बस इतना कहना चाहिए, लेकिन यह हमारे पापों को तोड़ रहा है। बारथ के इस बारे में बात करने का तरीका अनुग्रह की विजय है।

यह अनुग्रह की विजय है। इसलिए, कार्ल बारथ के लिए, इसका मतलब यह था कि ईश्वर का अनुग्रह हमारे पाप से ज़्यादा शक्तिशाली है। ईश्वर का अनुग्रह मानवता के पाप से ज़्यादा शक्तिशाली है।

तो, परमेश्वर की कृपा हमारे पापों को तोड़ देती है, और परमेश्वर हमें छुड़ाता है। अब, यहाँ बताया गया है कि उसने इसे किस तरह कहा। परमेश्वर की हाँ हमारी ना से ज़्यादा मज़बूत है।

परमेश्वर की हाँ हमारी ना से ज़्यादा मज़बूत है। अपने पाप में हम परमेश्वर को ना कह रहे हैं, लेकिन कार्ल बार्थ के लिए, परमेश्वर की हाँ उस ना पर हावी हो जाएगी। आप अंततः परमेश्वर को ना नहीं कह सकते।

ठीक है। और लूथर की तरह, उनका मानना था कि हम अभी भी पापी के रूप में जीते हैं। मेरे जीवन में अभी भी परमेश्वर का औचित्य है, लेकिन मैं अभी भी अपने जीवन में पापी हूँ क्योंकि मैं अभी भी परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह के कार्य कर रहा हूँ।

लेकिन मैं ऐसा भगवान के औचित्य के तहत करता हूँ। तो, वह इस तरह से लूथर की तरह ही है। ठीक है।

तो, यहाँ हमारी प्रतिक्रिया क्या है? हमारी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए? लोगों की प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए? हमारी प्रतिक्रिया पूरी तरह से ईश्वर की कृपा पर निर्भर होनी चाहिए। हम पूरी तरह से, पूरी तरह से, 100% ईश्वर की कृपा पर निर्भर हैं, जिसका, बार्थ के अनुसार, मतलब है कि हम कामों पर निर्भर नहीं हैं। हम अच्छे कर्मों पर निर्भर नहीं हैं।

हम अनुभव पर निर्भर नहीं हैं। हम अच्छी भावनाओं पर निर्भर नहीं हैं। हम केवल निर्भर हैं।

हम खुद को सिर्फ ईश्वर की दया पर छोड़ देते हैं और हम पूरी तरह से उनकी कृपा पर निर्भर हैं। यहाँ सवाल यह है कि क्या बार्थ एक सार्वभौमिक व्यक्ति थे? यहाँ सवाल यह है कि क्या बार्थ मानते थे कि सभी लोग ईश्वर की कृपा से बच जाएँगे? क्योंकि ईश्वर की कृपा हमारी... ईश्वर की हाँ हमारी ना से ज़्यादा मज़बूत है। ईश्वर की कृपा हमारे पाप से ज़्यादा मज़बूत है।

तो, सवाल यह है कि क्या भगवान सभी को मुक्ति दिलाएँगे? क्या कहानी यहीं खत्म हो जाती है? क्या भगवान की कृपा सभी को मुक्ति दिलाएगी? खैर, वह वास्तव में इस सवाल का जवाब नहीं देते हैं। यह वास्तव में एक खुला सवाल है। मैंने कहानी सुनी है, लेकिन यह शायद अपोकलिफ़ल है।

मैंने कहानी सुनी है कि किसी ने बार्थ से पूछा कि क्या वह एक सार्वभौमिकवादी है, और उसने कहा कि वह एक छोटे से यू के साथ एक सार्वभौमिकवादी था। तो, मुझे नहीं पता कि यह सच है या नहीं, लेकिन वह निश्चित रूप से उस दिशा में झुका था क्योंकि उसके पास ईश्वर की कृपा के बारे में इतना मज़बूत दृष्टिकोण था कि वह मनुष्यों के पाप को दूर कर सकता है। और पाप का कोई... पाप और पाप का कोई अंतिम जीवन नहीं है। यह मरने वाला है, जबकि ईश्वर की कृपा हमेशा के लिए है।

तो, वह निश्चित रूप से उस दिशा में झुका, इसमें कोई संदेह नहीं है। ठीक है, एक और बात। हम अभी भी यहाँ यीशु पर हैं, इसलिए हमने यीशु को नहीं छोड़ा है।

मैंने बार्थ के लिए यीशु मसीह को नहीं छोड़ा है। दूसरी बात यह है कि, बेशक, बार्थ क्राइस्टोलॉजी में शामिल हो जाता है। ठीक है, और आप क्या मानते हैं... अनुमान लगाइए कि क्राइस्टोलॉजी के मामले में उसका सबसे बड़ा अंश कौन सा होगा।

क्या कोई इस बारे में अनुमान लगाना चाहता है? इसे फिर से कहो। यह एक अच्छा अनुमान है। मुझे यह पसंद है, लेकिन पूरी तरह से नहीं।

उनका सबसे बड़ा अंश, आपको इसे नोट करने की ज़रूरत है। जब उनका संबंध क्राइस्टोलॉजी से होता है, तो उनका सबसे बड़ा अंश, सभी अंशों से ऊपर है फिलिप्पियों। फिलिप्पियों अध्याय 1। आप पूरे 1 से लेकर... मुझे खेद है, फिलिप्पियों अध्याय 2। आप पूरे 1 से लेकर 11 तक की बातें ले सकते हैं, लेकिन उन्होंने श्लोक 5 से शुरू करने पर ध्यान केंद्रित किया। इसलिए, जहाँ तक उनका संबंध है, जब क्राइस्टोलॉजी की बात आई... तो, वह क्राइस्टोलॉजिकल चर्चा में प्रवेश करने जा रहे हैं।

वह इससे पीछे नहीं हटने वाला है। यह शुरू से ही चल रहा है... शुरुआती चर्च, यीशु मसीह के समय से। जहाँ तक उसका सवाल है, यीशु एक ही समय में पूरी तरह से ईश्वर और पूरी तरह से इंसान हैं।

इसलिए, वह एक ही समय में पूरी तरह से दिव्य और पूरी तरह से मानव है। ये दोनों चीजें अविभाज्य हैं। आप पूरी मानवता को पूरी दिव्यता से अलग नहीं कर सकते... यीशु की पूरी मानवता को मसीह की पूरी दिव्यता से।

और इसलिए, फिलिप्पियों 2:5 से 11 का वर्णन करने का उनका तरीका बहुत ही सुंदर है। इसलिए, हम पहले 5 को लेंगे। जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा, वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, कि दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में जन्म लिया।

और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर, उसने अपने आप को दीन किया और मृत्यु तक, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु तक आज्ञाकारी बना रहा। तो, फिलिप्पियों 2:5 से 8 में प्रभु का हमारा सेवक बनना दर्शाया गया है। इसी तरह से उसने फिलिप्पियों 2:5 से 8 का वर्णन किया है। यह प्रभु के हमारे सेवक बनने का एक प्रदर्शन है।

लेकिन बाइबल यहीं समाप्त नहीं होती। फिलिप्पियों की कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। इसलिए, प्रभु हमारा सेवक बन गया है।

लेकिन फिर, 9 पर ध्यान दें। इसलिए, परमेश्वर ने उसे बहुत ऊंचा किया है, उसे वह नाम दिया है जो हर नाम से ऊपर है, ताकि यीशु के नाम पर, स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हर घुटना झुक जाए, और हर जीभ यह स्वीकार करे कि यीशु मसीह परमेश्वर पिता की महिमा के लिए प्रभु है। खैर, फिलिप्पियों 2, 9 से 11 में सेवक का हमारा प्रभु बनना बताया गया है। मुझे लगता है कि फिलिप्पियों के अंश से निपटने का यह एक सुंदर तरीका है।

जहाँ तक उनका सवाल है, यह बाइबल में सबसे महान क्राइस्टोलॉजिकल मार्ग है। यह इससे निपटने का एक सुंदर तरीका है। प्रभु हमारा सेवक बन रहा है, और सेवक हमारा प्रभु बन रहा है, और यह बार्थ के लिए एक तरह से चक्राकार है।

प्रभु हमारा सेवक बन गया, लेकिन सेवक हमारा प्रभु बन गया, और आप एक चक्र में घूमते रहते हैं। आप उन दो चीजों को अलग नहीं कर सकते, मानव और दिव्य प्रकृति। इसलिए, वह क्राइस्टोलॉजिकल तर्क से नहीं डरता।

जैसा कि आप उम्मीद कर सकते हैं, वह इसके ठीक बीच में पहुँच जाता है। मुझे नहीं पता कि वह इस पर कितना समय बिताता है, शायद 300 या 400 पृष्ठ या उससे भी ज्यादा, लेकिन वह इस पर काफ़ी समय बिताता है। ठीक है, तो यह यीशु है, और दो अंश, इसका दिल जॉन 1, 14 है, और फिर क्राइस्टोलॉजी, फिलिप्पियों 2:5 से 11।

ठीक है, चलो बस एक मिनट के लिए रुकते हैं। यीशु के बारे में कुछ? यीशु, कार्ल बार्थ के लिए पाप रहित उद्धारकर्ता। यीशु के बारे में कुछ? ठीक है, तो हमारे पास भगवान है, फिर हमारे पास हमारे पाप हैं, और फिर हमारे पास भगवान हैं जो यीशु मसीह के व्यक्तित्व में हमारे पापों को तोड़ते हैं।

ठीक है, तो अब हम सब तैयार हैं। हम उनके तर्क को समझते हैं। ठीक है, पाँचवाँ नंबर है पवित्रशास्त्र, बाइबल।

वह बाइबल के बारे में बात करता है। वास्तव में, सबसे पहले खंड का शीर्षक है ईश्वर का वचन, लेकिन उस अर्थ से उसका मतलब ईश्वर का वचन, मसीह है, लेकिन साथ ही ईश्वर का वचन भी है जो बाइबल में आता है। ठीक है, तो वह बाइबल के साथ क्या करने जा रहा है? खैर, वह क्या करने जा रहा है... लड़का, यह थोड़ा जटिल हो जाता है, लेकिन वैसे भी, वह बाइबल के साथ क्या करने जा रहा है? वह बाइबल के बारे में समान रूप से बहस करने जा रहा है।

वह क्राइस्टोलॉजी के उदाहरण का उपयोग करने जा रहा है। ठीक है, तो यीशु एक ही समय में पूरी तरह से मानव और पूरी तरह से दिव्य हैं। ये दोनों चीजें अविभाज्य हैं।

जहाँ तक उनका सवाल है, वे लिखित शब्द के बारे में भी यही तर्क देते हैं। उनका कहना है कि लिखित शब्द पूरी तरह से मानवीय और साथ ही पूरी तरह से ईश्वरीय भी है। इसलिए, उनके लिए यह पूरी तरह से ईश्वरीय शब्द है।

यह कार्ल बार्थ के लिए ईश्वर का वचन है, लेकिन यह कार्ल बार्थ के लिए पूरी तरह से मानवीय वचन भी है। इसलिए बार्थ के लिए यही महत्वपूर्ण है। अब, आप बाइबल को इस तरह से देखने से सहमत हो सकते हैं या नहीं भी।

मैं बस यह समझाने की कोशिश कर रहा हूँ कि बार्थ ने बाइबल को किस तरह देखा, लेकिन उन्होंने बाइबल को बाइबल से शुरू करके नहीं देखा और फिर मसीह के किसी सिद्धांत पर पहुँचे। उनके पास पहले मसीह का सिद्धांत है, और फिर उसी सिद्धांत से उन्होंने बाइबल के बारे

में अपना दृष्टिकोण विकसित किया। जहाँ तक उनका सवाल है, बाइबल का मूल काम मसीह की गवाही देना है।

यही मूल काम है। हमें इसी काम के लिए यह काम मिला है। मसीह की गवाही देना है।

जब आत्मा हमें यह समझने में मदद करती है कि वह मसीह की गवाही देती है, तो हम सही काम कर रहे हैं। कार्ल बारथ जो कर रहे हैं वह सचेत रूप से एक मध्यम मार्ग अपनाना है। मध्यम मार्ग क्या है? मध्यम मार्ग यह है कि वह उदारवाद से एक स्टैंड ले रहे हैं, जिसने ईश्वर के वचन को तुच्छ समझा है।

यह वास्तव में ईश्वर का वचन नहीं है, और यह एक तरह की मानवीय पुस्तक है। आप इस पुस्तक में ईश्वर और यीशु के बारे में कुछ बातें निकाल सकते हैं, लेकिन उदारवाद ने ईश्वर के वचन के अधिकार को नकार दिया है। वह बाइबल को उससे कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण मानता है।

तो, एक तरफ उदारवाद। लेकिन दूसरी तरफ कट्टरवाद। जहाँ तक उनका सवाल है, कट्टरवाद ने बाइबल के बारे में एक दृष्टिकोण पेश किया, जो विडंबना यह है कि यीशु के बारे में उनके दृष्टिकोण से कहीं अधिक ऊँचा था।

यीशु के बारे में उनके दृष्टिकोण के कारण, यदि वे मसीह के दृष्टिकोण से सही थे, तो यीशु के बारे में उनका दृष्टिकोण यह होना चाहिए कि वह एक ही समय में पूर्ण रूप से ईश्वर और पूर्ण रूप से मनुष्य हैं। यही उनका दृष्टिकोण होना चाहिए। यदि वे उनकी मानवता या उनकी दिव्यता में से किसी एक में गिरते हैं, तो यह विधर्म में गिरना है।

चर्च ने पहले ही यह साबित कर दिया है। हालाँकि, बाइबल के बारे में उनका मानना है कि यह पूरी तरह से ईश्वरीय है। इसमें मानवता बिलकुल नहीं है।

यह पूरी तरह से ईश्वरीय है। और इसलिए, जहाँ तक बारथ का सवाल है, उन्हें यहाँ एक तरह का कागजी पोप मिल गया है। उनके पास शास्त्र के बारे में यीशु के दृष्टिकोण से कहीं ज़्यादा ऊँचा दृष्टिकोण है।

और आप बाइबल के बारे में यीशु के नज़रिए से ज़्यादा ऊँचा नज़रिया नहीं रख सकते। अन्यथा, आप यहाँ केंद्र से दूर हैं। इसलिए, उन्हें उदारवादी धारणा पसंद नहीं है कि बाइबल सिर्फ़ एक सामान्य अच्छी किताब है, और आप इसे पढ़ते हैं।

इसमें कुछ अच्छी बातें हैं, लेकिन उन्हें कट्टरपंथी दृष्टिकोण पसंद नहीं है जो शास्त्र के सिद्धांत को यीशु के सिद्धांत से ऊपर रखता है। इसलिए वह दोनों मामलों पर बहस करने जा रहा है, और जहाँ तक उसका सवाल है, वह बीच में खड़ा होने जा रहा है। तो, ठीक है।

अब, शास्त्र के प्रति उनके दृष्टिकोण से दो बातें सामने आती हैं: उपदेश देने का महत्व और घोषणा का महत्व। चर्च में बारथ का काम क्या है? चर्च का मुख्य काम क्या है? चर्च का मुख्य काम इस पुस्तक से सुसमाचार की अच्छी खबर का प्रचार करना है। यही काम है।

इसलिए बार्थ के लिए प्रचार करना केंद्रीय है। बार्थ खुद एक प्रचारक थे, लेकिन प्रचार करना केंद्रीय है। सुसमाचार की घोषणा, यही इसका सार है।

तो, वह एक अच्छा प्रोटेस्टेंट है। वह एक अच्छा सुधारक है, है न? क्योंकि यही वह है जो सुधारकों ने धर्मग्रंथों के उपदेशों को महत्व में लाया... यही वह है जो चर्च करता है। आप यूरोप से गुजरें, और आप बहुत से... उदाहरण के लिए, यदि आप स्कैंडिनेविया जाते हैं, तो आप बहुत से लूथरन चर्चों में जाते हैं क्योंकि यह वहाँ बहुत प्रचलित है।

और मुझे उन चर्चों में लगी मूर्तियाँ बहुत पसंद हैं, उन चर्चों में लूथर की बहुत सारी मूर्तियाँ हैं। आप देखेंगे कि जब आप लूथर की मूर्ति देखते हैं, तो आपको लूथर वहाँ खड़ा दिखाई देता है, और अक्सर, वह बाइबल की ओर इशारा करता है। मूर्ति बाइबल की ओर इशारा कर रही है।

खैर, यह बहुत सुधारवादी, बहुत प्रोटेस्टेंट है, है न? खैर, बार्थ इस बात से सहमत होंगे क्योंकि बाइबल और बाइबल से उपदेश देना शास्त्र के उच्च दृष्टिकोण के परिणामों में से एक है। शास्त्र के उच्च दृष्टिकोण का दूसरा परिणाम रहस्योद्घाटन के बारे में उनका दृष्टिकोण है, जो प्रकट होता है उसके बारे में उनका दृष्टिकोण। ठीक है।

जहाँ तक बार्थ का सवाल है, बाइबल में परमेश्वर का रहस्योद्घाटन और धर्मग्रंथों के माध्यम से जो प्रकटीकरण आता है, वह तब नहीं आता जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं और जब हम बाइबल को समझने के लिए अपने दिमाग का उचित उपयोग करते हैं। यह वह समय नहीं है जब सच्चा रहस्योद्घाटन आता है। यह वह समय नहीं है जब सच्चा रहस्योद्घाटन घटित होता है।

ठीक है। सच्चा रहस्योद्घाटन तब होता है जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं। परमेश्वर का सच्चा रहस्योद्घाटन तब होता है जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं, न कि तब जब हम सोचते हैं कि बाइबल का अध्ययन करके हम वास्तव में परमेश्वर और खुद को जान लेंगे।

सच्चा रहस्योद्घाटन तब होता है जब हम बाइबल को अपना अध्ययन करने देते हैं। और इसलिए, बार्थ ने कहा, वास्तव में जो होता है वह यह है कि हम बाइबल के शोधकर्ता नहीं हैं। हम बाइबल के श्रोता हैं।

हम बाइबल के बारे में नहीं सोचते, और अगर हम सोचते हैं कि बाइबल का संदेश सिर्फ बाइबल पर शोध करके ही प्राप्त किया जा सकता है, तो हम बाइबल का संदेश नहीं पा सकेंगे। हम बाइबल का संदेश तभी पा सकेंगे जब हम बाइबल के श्रोता बनेंगे। इसलिए प्रचार करना इतना महत्वपूर्ण है।

अब, कुछ हफ्तों में, हममें से कुछ लोग बाल्टीमोर, मैरीलैंड में एक सम्मेलन में भाग लेने जा रहे हैं, और वहाँ बहुत से लोग होंगे जो महसूस करेंगे कि बाइबल का अध्ययन करके, वे वास्तव में समझ जाएँगे कि ईश्वर का रहस्योद्घाटन क्या है। लेकिन बहुत से लोग हैं जो पेशेवर रूप से बाइबल का अध्ययन करते हैं और बहुत से लोग जो पेशेवर रूप से बाइबल पढ़ाते हैं, वे बाइबल

के श्रोता नहीं हैं। वे नहीं सुन रहे हैं कि बाइबल उनसे क्या कहती है, आप जानते हैं, या चर्च से क्या कहती है।

वे सिर्फ बाइबल पर शोध कर रहे हैं। वे पेशेवर तौर पर यही करते हैं। लेकिन, आप जानते हैं, बार्थ वास्तव में इसे चुनौती देंगे क्योंकि जब तक आप बाइबल नहीं सुनेंगे, तब तक सारा शोध महत्वपूर्ण है, सारा अध्ययन महत्वपूर्ण है, आप जानते हैं।

तो, मुझे लगता है कि यह एक लंबा उपदेश है, इसलिए मैं यहीं रुकता हूँ, लेकिन बार्थ के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण था, रहस्योद्घाटन क्या है। तो, ठीक है, तो शास्त्र। अब हम शास्त्र पर आते हैं।

यहाँ पवित्रशास्त्र के बारे में कोई प्रश्न है? ठीक है, आप ठीक हैं? चलो सरकार पर आते हैं। चलो यहाँ सरकार पर आते हैं। सरकार के बारे में और चर्च और राज्य के साथ संबंधों की समझ के बारे में बस कुछ बातें, तो।

ठीक है, आप इस अनुच्छेद में देखेंगे कि हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर चर्च की स्थापना करता है, बेशक, लेकिन परमेश्वर सरकारें भी स्थापित करता है। तो, परमेश्वर चर्च का लेखक है, लेकिन परमेश्वर विभिन्न प्रकार की सरकारों का भी लेखक है। ठीक है, आपको बार्थ के लिए सावधान रहना होगा कि ईसाई धर्म को कभी भी किसी भी प्रकार की सरकार के साथ नहीं मिलाया जा सकता है।

बार्थ के अनुसार सरकार का कोई भी ऐसा रूप नहीं है जो कमोबेश ईसाई हो। सरकार के कुछ ऐसे रूप हैं जिन्हें ईश्वर स्थापित करता है, जिन्हें ईश्वर स्थापित करता है, ईश्वर उन्हें क्रियान्वित करता है, और उनकी कुछ ज़िम्मेदारियाँ होती हैं। लेकिन ईसाई धर्म को कभी भी किसी भी प्रकार की सरकार से नहीं जुड़ना चाहिए।

भगवान ने एक चर्च की स्थापना की है। भगवान ने राज्य की स्थापना की है। ठीक है, इसलिए, हमें सावधान रहना होगा, और उनका मानना था कि सभी सरकारें, स्वभाव से, मानव पाप से बंधी हुई हैं क्योंकि वे मनुष्यों द्वारा चलाई जाती हैं।

इसलिए, स्वभाव से, वे मानवीय पाप से बंधे हुए हैं। इसलिए, सावधान रहें, चर्च, कैपिटल सी, सावधान रहें कि आप खुद को किसी भी प्रकार की सरकार से न जोड़ें क्योंकि आप खुद को किसी न किसी तरह की पापी संस्था से जोड़ने जा रहे हैं। चर्च मसीह का शरीर है, और मसीह की दुल्हन को किसी भी तरह की सरकार से नहीं जोड़ा जा सकता।

तो अब सवाल यह है कि वह नाजी सरकार को बुलाने में इतना क्यों शामिल हो गया? अगर वह अपने सिद्धांत पर अडिग रहने वाला है कि आप खुद को किसी भी तरह की सरकार से नहीं जोड़ सकते, चर्च की स्थापना भगवान ने की है, और सरकार की स्थापना भगवान ने की है; तो उसने नाजी सरकार की आलोचना क्यों की? अब, दूसरा सवाल यह है कि डिट्रिच बोनहोफर, जिसके बारे में हम आगे पाठ्यक्रम में अध्ययन करेंगे, वह हिटलर को मारने के प्रयास में क्यों शामिल हुआ? वह बार्थ से कहीं ज्यादा शामिल था। वह हिटलर को मारने के प्रयास में शामिल हो गया। क्यों? अगर ये लोग अपने धर्मशास्त्र, चर्च और राज्य के प्रति सच्चे थे, तो इन लोगों ने हिटलर की

आलोचना क्यों की और बोनहोफर को भी हिटलर को मारने की साजिश में शामिल होने के लिए मजबूर क्यों किया? खैर, संक्षेप में, उन्हें ऐसा करने के लिए क्या प्रेरित किया गया था, यह स्पष्ट था कि जर्मनी में जो सरकार काम कर रही थी, वह भगवान द्वारा नियुक्त नहीं थी।

अगर यह ईश्वर द्वारा निर्धारित किया गया होता, तो यह उन विशेषताओं का उदाहरण होता जो ईश्वर सरकार से चाहता है: करुणा, गरीबों की देखभाल, और यह सुनिश्चित करना कि लोगों के जीवन में उनके साथ कोई अन्याय न हो। यही वह काम है जिसके लिए ईश्वर ने सरकार को नियुक्त किया है। इसलिए, जब यह नाज़ी जर्मनी जैसा काम करना शुरू कर देता है, यानी एक समय में लाखों लोगों का कत्लेआम करना, तो यह सरकार नहीं रह जाती।

यह सरकार नहीं है। यह ईश्वर के खिलाफ विद्रोह है। इसलिए, यहाँ कोई नेता या सरकार नहीं है।

आपके पास एक अ-नेता है, और आपके पास यहाँ एक झूठी सरकार है। इसलिए, चर्च उस सरकार के बारे में एक वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण के रूप में खड़ा हो सकता है। चर्च खड़े होकर उस सरकार को देख सकता है और कह सकता है कि यह सरकार ईश्वर द्वारा नियुक्त नहीं है।

तो, यह एक सच्ची सरकार नहीं है। इसलिए, किसी को भी उस सरकार के प्रति कोई निष्ठा नहीं है। इसलिए, यही कारण है कि बोनहोफ़र सरकार की आलोचना कर सकता था, और यही कारण है कि बार्थ सरकार की आलोचना कर सकता था, और यही कारण है कि बोनहोफ़र ने अंततः हिटलर को मारने का फैसला किया।

ईश्वर से डरो, सम्राट का सम्मान करो। धर्मग्रंथ हमें बताता है कि अभी तक उद्धार न पाए गए संसार में, जिसमें चर्च भी मौजूद है; राज्य को, ईश्वरीय नियुक्ति के अनुसार, न्याय और शांति प्रदान करने का कार्य सौंपा गया है। सरकार को यही करना चाहिए।

सवाल यह है कि क्या नाज़ी न्याय और शांति प्रदान कर रहे थे? शालोम, बिल्कुल नहीं। हम झूठे सिद्धांत को अस्वीकार करते हैं, और राज्य को, अपने विशेष आदेश से परे, मानव जीवन का एकल और अधिनायकवादी आदेश बनना चाहिए और बन सकता है, इस प्रकार चर्च के आह्वान को भी पूरा करना चाहिए। इसलिए, राज्य ने लोगों के जीवन का एकल आदेश बनने की कोशिश की, और आप ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि आप चर्च के आह्वान को अपना रहे हैं।

तो, नाज़ियों को ना कहने के लिए सभी तरह के कारण हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। फिर, बारमेन घोषणापत्र में बताया गया है कि बारमेन घोषणापत्र का अंत कैसे होता है। बारमेन घोषणापत्र में कहा गया है कि यीशु मसीह ही ईश्वर का एकमात्र वचन है जिसे हमें सुनना, उस पर भरोसा करना और उसका पालन करना है।

तो, बारमेन घोषणा इस दुनिया के सामने यीशु की घोषणा के साथ समाप्त होती है जिसमें ये लोग रह रहे थे, जो बहुत भयानक था, लेकिन वह सरकार है। ठीक है, तो पृष्ठभूमि, ईश्वर, पाप, यीशु, शास्त्र और सरकार का उत्थान। क्या कार्ल बार्थ के साथ इनमें से किसी के बारे में कुछ है? क्या आप समझते हैं कि वह इतना महत्वपूर्ण क्यों था? क्या आप समझते हैं कि उसने पेंडुलम को रूढ़िवाद की ओर कैसे वापस लाया? इस पर स्पष्ट है।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 20 है, 20वीं सदी में प्रोटेस्टेंटवाद, कार्ल बार्थ।